Aspects of INDIAN HISTORY

Edited by

N.R. FAROOQI

S.Z.H. JAFRI

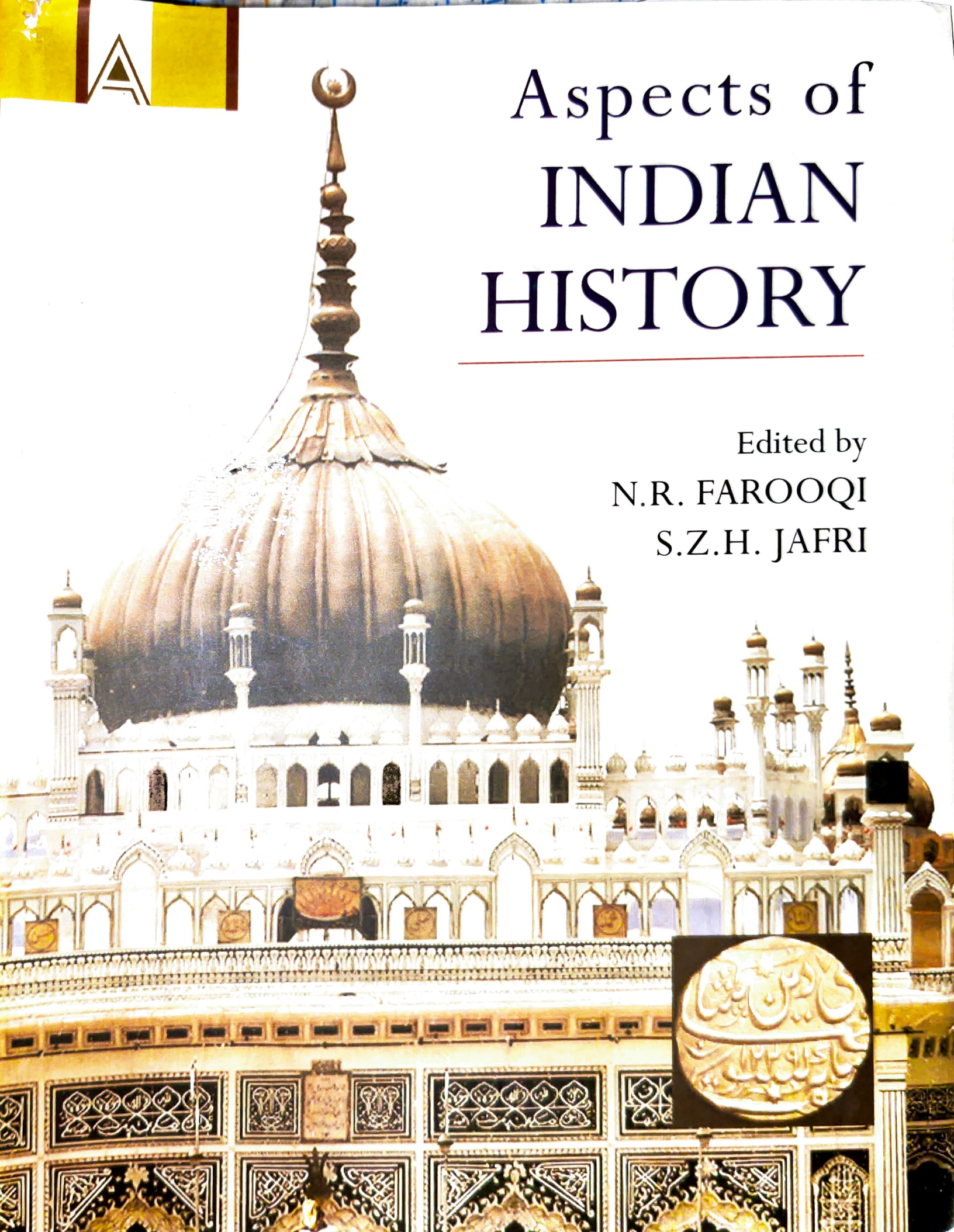

अध्याय 8

ब्रिटिश कुमाऊं में वनांदोलन और स्थानीय पत्रकारिता

ज्योति साह

सन् 1816 ई. में गोरखों को पराजित करके ईस्ट इंडिया कंपनी ने कुमाऊं और गढ़वाल पर अपना सीधा शासन स्थापित किया। उत्तर में तिब्बत से लेकर दक्षिण में रुहेलखंड तथा पश्चिम में टिहरी राज्य से पूर्व में नेपाल तक विस्तृत लगभग 9,600 वर्ग कि.मी. का भूभाग जिसमें वर्तमान देहरादून, उत्तरकाशी और टिहरी के अतिरिक्त संपूर्ण उत्तराखंड सम्मिलित था, ब्रिटिश कुमाऊं के नाम से जाना जाने लगा। ब्रिटिश कुमाऊं में वनांदोलन को 1864 में वन विभाग की स्थापना के पश्चात देशभर में होने वाले जनजातियों और कृषक वर्ग के वनाधिकारों के लिए किए जाने वाले आंदोलनों के परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है। ब्रिटिश कुमाऊं में वननीति और वनांदोलन पर 1922 में गोविंद वल्लभ पंत से लेकर वर्तमान में रामचंद्र गुहा, माधव गाडगिल, अजय सिंह रावत आदि द्वारा बहुत कार्य किया जा चुका है। प्रस्तुत शोधपत्र में ब्रिटिश कुमाऊं के वनांदोलन को स्थानीय पत्रकारिता के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है। जनआंदोलनों पर केंद्रित इतिहास लेखन में महत्वपूर्ण शोध सामग्री के रूप में पत्रकारिता को देखा जाने लगा है। पत्रकारिता न केवल अपने समकालीन समाज का प्रतिबिंबन होती है, वरन समाज के पथप्रदर्शन का कार्य भी करती है। ब्रिटिश कुमाऊं में *अल्मोड़ा अखबार* (1871-1918), *गढ़वाली* (1905-1950), *पुरुषार्थ* (1918-1923), *शक्ति* (1918), *तरुण कुमाऊं* (1922-1923), *कुमाऊं कुमुद* (1922-1945), *स्वाधीन प्रजा* (1930-1933), आदि प्रमुख पत्र प्रकाशित हो रहे थे। स्थानीय प्रमुख राष्ट्रवादी और समाज सुधारक बद्रीदत्त पांडे, तारा दत्त गैरोला, मोहन जोशी, गिरिजा दत्त नैथाणी, मुकुंदीलाल, दुर्गादत्त पांडे, मनोहर पंत, रामसिंह धौनी, मुथरा दत्त, त्रिवेदी, भैरव दत्त धूलिया, देवी दत्त पंत, हर्षदेव औली, पीतांबर पांडे, पूरन चंद्र तिवाड़ी आदि इन पत्रों से जुड़े थे। बीसवीं सदी के पहले-दूसरे दशक में स्थानीय राष्ट्रवादी पत्र अत्यंत लोकप्रिय थे तथा स्थानीय समाज को प्रभावित कर रहे थे। इन पत्रों ने न केवल वनांदोलन के समाचार प्रकाशित किए वरन अपने संपादकियों, लेखों और पाठकों